संज्ञा - ①

DATE / PAGE NO.: ①

परिभाषा → किसी व्यक्ति, वस्तु, नाम आदि के गुण, धर्म व स्वभाव आदि का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं।

संज्ञा के भेद - ① ~~जातिवाचक~~ व्यक्तिवाचक → यह किसी विशेष व्यक्ति, स्थान, वस्तु का बोध कराती है।

② जातिवाचक → जिस शब्द से उसकी सम्पूर्ण जाति का बोध हो।

③ भाववाचक → जिस संज्ञा शब्द से पदार्थों की अवस्था, गुण-दोष, धर्म आदि का बोध हो। जाम में मिठास है।

④ समुदायवाचक → जिस संज्ञा शब्दों से अनेक वस्तुओं के समूह का बोध हो।

⑤ द्रव्यवाचक → जिस संज्ञा शब्दों से किसी धातु द्रव्य, अन्य पदार्थों का बोध हो।

SMC Education

सर्वनाम - २

परिभाषा → संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

प्रकार → ① पुरुषवाचक → पुरुष के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले।

② निश्चयवाचक → किसी निश्चित वस्तु का बोध कराने वाले।

③ अनिश्चयवाचक → किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो।

④ प्रश्नवाचक → प्रश्न का बोध कराने वाले। कितना, कौन, किसे।

Scanned with CamScanner

(v) सम्बन्धवाचक → सम्बन्ध प्रकट करने वाले शब्द

(vi) निजवाचक → जिससे कर्ता के साथ अपनापन प्रकट होता है। आप, अपना, मेरा आ

(vii) अन्य सर्वनाम → इस के हिन्दी वैयाकरण डॉ. श्यामसुन्दर के अनुसार कुछ प्रश्नवाचक श्रेणी के सर्वनामों को भी माना गया है, जैसे — जो कोई, सब कोई, हर कोई।

कारक — ③

परिभाषा → वे शब्द जिनका क्रिया के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सबंध रहता है अथवा जो शब्द क्रिया सम्पादन में उपयोगी सिद्ध होते हैं उन्हें कारक कहते हैं।

प्रकार — ८

कर्ता - ने
कर्म - को
करण - से, द्वारा,
सम्प्रदान - के लिए
अपादान - से (अलग होने के अर्थ में)
सबंध - का, के, की, वा, रे, री
अधिकरण - में, पर
सम्बोधन - हे, ओ, अरे।

SMC Education

विशेषण — ५

परिभाषा → संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

Scanned with CamScanner

विशेष्य → जिस संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द की विशेषता बताई जाये, वह विशेष्य कहलाता है।

— गीता सुन्दर है। इसमे सुंदर विशेषण है और गीता विशेष्य है।

विशेषण के भेद - 4

① गुणवाचक → जिन शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के गुण-दोष का बोध हो, वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

② परिमाण वाचक → किसी वस्तु की नाप या नापतौल का ज्ञान है।

ⓐ ① निश्चित परिमाण ② अनिश्चित परिमाण

③ संख्यावाचक → किसी संख्या का बोध हो।

④ संकेतार्थक सर्वनाम वाचक विशेषण

SMC Education

समास - ⑤

परिभाषा → अनेक पदों को मिलाकर एक पद का निर्माण करना समास कहलाता है।

समास का अर्थ - संक्षिप्तीकरण करना।

प्रकार - 6

① अव्ययीभाव समास → इसमे पहला पद अव्यय होता है। उस अव्यय पद का रूप, लिंग कारक, वचन नहीं बदलता।

समस्त पद	विग्रह
आजन्म	जन्म से

Scanned with CamScanner

② तत्पुरुष समास → इसमें पहला पद गौण व बाद का पद प्रधान होता है और दोनों पदों के बीच का कारक चिन्ह लुप्त हो जाता है, तथा विग्रह करने पर कारक चिन्ह प्रकट हो जाता है। जैसे तत्पुरुष
समस्त पद विग्रह
धनुर्धारी - धनुष को धारण करने वाला

③ कर्मधारय → जिन दो पदों के मध्य विशेषण विशेष्य एवं उपमान उपमेय का भाव अंतर्निहित होता है तथा विग्रह करने पर सार रूप में प्रस्तुत हो जाता है। नीलाम्बर = नीला है जो अम्बर.

④ द्वन्द्व समास → इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं लेकिन उनके बीच में 'या' अथवा 'और' शब्द का लोप होता है,
राधा-कृष्ण = राधा और कृष्ण

⑤ द्विगु समास → पहला पद संख्यावाचक होता है तथा दूसरा पद प्रधान होता है।
सप्ताह = सात दिनों का समूह

⑥ बहुव्रीहि समास → इस समास में दोनों ही पद गौण होते हैं उनमें कोई भी पद प्रधान नहीं होता।
ex → घनश्याम = घन के समान श्याम - विष्णु
त्रिनेत्र = तीन है नेत्र जिसके - शंकर

SMC Education

Scanned with CamScanner

क्रिया - ⑥

SMC Education

परिभाषा → जिस शब्द अथवा शब्द समूह जिसके अनुसार किसी कार्य के होने अथवा करने का बोध हो, क्रिया कहलाती है।
अनु बुध पी रही है।

भेद → ① सकर्मक क्रिया → जिन क्रियाओं का फल (कर्ता को छोड़कर) कर्म पर पड़ता है वे सकर्मक क्रिया कहलाती है। लोग गायन पढ़ते हैं।

② अकर्मक →
जिन क्रियाओं का फल सीधा कर्ता पर ही पड़े।
गौरव सोता है।

उपसर्ग - ⑦

परिभाषा → किसी शब्द के पहले प्रयुक्त होकर उसको एक विशेष अर्थ प्रदान कर देना।
उदा → आ + गमन = आगमन
प्र + ताप = प्रताप

प्रत्यय - ⑧

परिभाषा → किसी शब्द या धातु के अंत में जुड़ने वाले शब्द या शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं।

आवना = उठावना, मुहावना, सुहावना
ईन = प्राचीन, महीन

Scanned with CamScanner

9- संधि एवं संधि विच्छेद

परिभाषा → दो वर्णों के होने वाला विकार संधि कहलाता है।

भेद - 3 ① स्वर संधि ② व्यंजन संधि ③ विसर्ग संधि

① स्वर संधि → दो स्वरों के परस्पर मेल से विकार उत्पन्न होता है।

ⓘ दीर्घ ⓘⓘ गुण ⓘⓘⓘ वृद्धि ⓘⓥ यण ⓥ अयादि ⓥⓘ पररूप संधि

② व्यंजन संधि → एक व्यंजन का दूसरे व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर दोनों के योग से बदले हुये ध्वनि का जो विकार पैदा होता है।

③ विसर्ग संधि → यदि पहले शब्द के अंत में विसर्ग ध्वनि आती है, तो उसके बाद में आने वाले शब्द के स्वर अथवा व्यंजन के साथ योग होने से जो ध्वनि का विकार उत्पन्न होता है।

10- मुहावरे

परिभाषा → विलक्षण व चमत्कारपूर्ण अर्थ का बोध कराने वाले वाक्यांश को मुहावरा कहते है।

अंग गिराना - उत्साह न दिखाना।

11- लोकोक्तियाँ / कहावतें

परिभाषा → अर्थ को पूर्णतया स्पष्ट करने वाला स्वतंत्र वाक्य लोकोक्ति कहलाता है।

SMC Education

Scanned with CamScanner

Kids
DATE / /
PAGE NO.:

अ- अपनी पढ़ाई अपने हाथ - अपना सम्मान बचाना अपने हाथ में होता है।

SMC Education

(12) - शुद्ध-अशुद्ध वर्तनी

हिन्दी में शब्द उच्चारण एवं लेखन की दृष्टि से शब्द शुद्धियों का ज्ञान अत्यावश्यक है।

अशुद्ध शुद्ध

आविश्-कार - आविष्कार
श्वयाल - श्यास

(13) शुद्ध-अशुद्ध वाक्य

संरचना की दृष्टि से पदों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं। भाषा में शब्दों के रूप, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास अव्यय, काल, वचन आदि व्याकरणिक पक्ष वाक्य की शुद्धता में सहायक है।

अशुद्ध - मैं तुम चलेंगे।
शुद्ध - मैं और तुम चलेंगे।

(14) विराम चिन्हों का प्रयोग -

→ अभिव्यक्तियों की पूर्णता हेतु वक्ता कहीं कहीं समय शब्दों पर कहीं जोर देना पड़ता है, कभी ठहरना पड़ता है और कभी-२

Scanned with CamScanner

विशेष संकेतों का सहारा भी लेना पड़ता है।

① पूर्ण विराम (।) → संदेश है।

② अल्प विराम (,) → प्रकाश ने शैव, आम और अन्नरस खाये।

③ अर्द्ध विराम (;) → जब तक हम गरीब है; वस्त्रहीन है; तब तक हमारा कल्याण नहीं हो सकता।

④ प्रश्नवाचक (?) → आप क्या कर रहे है?

⑤ विस्मयादिबोधक या सम्बोधन सूचक चिन्ह (!) → अरे यह क्या हुआ! हे भगवान् इसकी रक्षा करो!

⑥ अवतरण चिन्ह -

एकल उद्धरण चिन्ह (' ') → रामधारी सिंह 'दिनकर' प्रसिद्ध कवि है।

दोहरा उद्धरण चिन्ह (" ") → तिलक ने कहा, "स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है"।

⑦ निर्देशक चिन्ह (—) →

आँगन में ज्योत्स्ना ~~चमकती~~ चाँदनी छिटकी हुई थी।

⑧ समास चिन्ह (-) → माता-पिता, रण-भूमि।

⑨ कोष्ठक ( ) [ ] { } → राम ने (हँसते हुए) ने कहा।

⑩ विवरण चिन्ह (:-) → क्रिया के दो भेद है:-

⑪ संक्षेप सूचक चिन्ह (०) → इनाक को दि०,

⑫ लोप सूचक (. . .) (++++) → मैं तो परिणाम भोग ही रहा हूँ, कहीं आप - - - -

⑬ उपविराम (:) → रश्मिरथी : एक समीक्षा।

SMC Education

Scanned with CamScanner

SMC Education

(14) तुल्यता सूचक चिन्ह (=) → पवन = हवा

(15) हंस पद (^) → वह कल जयपुर जाएगा।

(16) पुनरुक्ति सूचक चिन्ह (" ") → इसका प्रयोग एक ही शब्द को बार-2 लिखे जाने से बचने के लिए।

(17) पाद चिन्ह (–) → केश खोला। मोर को देखो।

(18) दीर्घ उच्चारण चिन्ह (ऽ) → हे शऽऽम।

(19) पाद बिन्दु (.) → ज़मीन, ग़ज़ल

(15) पर्यायवाची शब्द

परिभाषा → समान अर्थ वाला शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाता है। ex

युवती → तरुणी, श्यामा, रमणी, सुंदरी।

भूँगा → शत्रुघ्न, शत्रुहंता, प्रवास।

(16) विलोम शब्द

परिभाषा → किसी शब्द के विपरीत अर्थ को विलोम शब्द कहते है।

शब्द	विलोम
सम	असम
क्रिया	प्रतिक्रिया

Scanned with CamScanner

(17) श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

Kids
DATE / /
PAGE NO.:

→ ऐसे शब्द जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं। लेकिन अर्थ में थोड़ी-सी भिन्नता के कारण नितांत अलग-अलग होते हैं। यथा →

अघ - पाप	अवसाद - सुस्त
अध - आधा	अवसाद - एक अलंकार

(18) तत्सम, तद्भव एवं देशज शब्द

हिन्दी भाषा में व्युत्पत्ति की दृष्टि से पाँच प्रकार के शब्द हैं - तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी एवं अर्धतत्सम।

① तत्सम → वे शब्द जो संस्कृत शब्दों के मूल रूप में ही हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं।

② अर्धतत्सम → जो संस्कृत से ईषत् परिवर्तित होकर हिन्दी में आये हैं।

③ तद्भव → ऐसे ~~शब्द~~ संस्कृत के शब्द जो कुछ परिवर्तित रूप में हिन्दी में प्रयुक्त हुए हैं।

तत्सम	तद्भव
आवश्यक	आवश्यकता
आशीष	असीस

SMC Education

(19)

वाच्य : कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य

→ वाच्य क्रिया का वह रूप है जिससे यह बोध

Scanned with CamScanner

SMC Education

होता है कि कर्ता, कर्म और भाव में से किसकी प्रधानता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि वाक्य में प्रयुक्त क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष कर्ता, कर्म या भाव में से किस के अनुसार है।

परिभाषा → वाच्य क्रिया के उस रूपांतर को कहते हैं जिससे कर्ता, कर्म और भाव के अनुसार क्रिया के परिवर्तन ज्ञात होते हैं।

→ कर्ता, कर्म अथवा भाव के अनुसार क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष का होना वाच्य कहलाता है।

उदा:→ सोमा पुस्तक पढ़ती है। - इस वाक्य में सोमा कर्ता है और उसके अनुसार क्रिया 'पढ़ती है' है।

वाच्य के भेद-3

① कर्तृवाच्य वाक्य → जिस वाक्य में क्रिया कर्ता के अनुसार हो, उसे कर्तृवाच्य वाक्य कहते हैं। इसमें वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्ता है, अर्थात क्रिया में कर्ता की प्रधानता है। उदा → सोहन पत्र लिखता है।

② कर्मवाच्य वाक्य → इस वाक्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

उदा → पत्र लिखा जाता है।

Scanned with CamScanner

SMC Education

③ भावाच्य वाक्य → इस वाक्य में कर्ता और कर्म की प्रधानता न होकर क्रिया भाव के अनुसार होती है, एवं उद्देश्य से बैठा नहीं जाता।

प्र (२०) पत्र लेखन →

पत्र का प्रकार	संबंध	संबोधन	अभिवादन	समाप्ति
कार्यालयी पत्र ①	कार्यालय के मुख्य अधिकारी द्वारा प्रेषित	आदरणीय, महोदय, महानुभाव, माननीय आदरणीय अधीक्षकजी माननीय मंत्रीजी	—	भवदीय, कृपाकांक्षी, प्रार्थी, विनीत
आवेदन पत्र ②	संबद्ध अधिकारी को आवेदन के रूप में	आदरणीय महोदयजी माननीय, महोदय	—	आपका आज्ञाकारी प्रार्थी, विनीत, धन्यवाद
व्यवसायिक पत्र ③	व्यवसायिक हित के लिए एक से अधिक फर्म/व्यक्ति	आदरणीय प्रबंधकजी, प्रिय महोदय, कृपाकांक्षी	नमस्ते, नमस्कार, आदर अभिवादन	भवदीय, आपका विश्वासपात्र
④ व्यक्तिगत पत्र	बड़े के लिए	पूज्य, पूज्यवर, आदरणीय, माननीय	~~प्रणाम~~ प्रणाम आदर नमस्कार	आपका आज्ञाकारी आपका कृपापात्र
	छोटे के लिए	प्रिय, प्रियबंधु	स्नेह आशीर्वाद, नमस्ते,	शुभाशीष, शुभेच्छु
	मित्र एवं समवयस्क के लिए	प्रियमित्र, प्रियवर, प्रियबंधु अथवा, शुभाशीष,	मधुर स्मरण, जयहिन्द	तुम्हारा भाई।

Scanned with CamScanner